डॉ. [illegible]
हिन्दी विभाग
महात्मा कॉलेज

उर्वशी (दिनकर)

प्रश्न 1: 'उर्वशी' काव्य के आधार पर उर्वशी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर: दिनकर द्वारा रचित 'उर्वशी' महाकाव्य हिन्दी साहित्य का कालजयी ग्रंथ है। इस काव्य के द्वारा कवि ने जीवन के गहरे प्रश्नों को सुलझाने का कार्य किया है। कहने को तो 'उर्वशी' पुरुरवा और उर्वशी की प्रेम कथा है किंतु उर्वशी के माध्यम से कवि ने जीवन-जगत के प्रश्न उठाए हैं। 'उर्वशी' का प्रतिपाद्य काम है। मानव मन की यह भावना और नारी प्रकृति को अपने वश में कर लेती है। ऋग्वेद में कहा गया है —

"काम तदग्रे समवर्तताधि... ।"

शास्त्रों और पुराणों में इसकी स्पष्ट चर्चा की गयी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ऋग्वेद काल से ही उर्वशी का व्यक्तित्व [illegible] कहा जाता है कि देव-मानव को समुद्र मंथन से जो अप्सराएँ मिली थीं उन्हीं में से उर्वशी भी थी। उर्वशी [illegible] के सम्बन्ध में अधिक सुंदर थी। कहा जाता है कि एक बार नारायण ऋषि ने घोर तपस्या किया। इन्द्र को भय हुआ कि कहीं उनकी तपस्या पूर्ण हो जाने से इन्द्रासन छिन जाएगा। इसलिए उनकी तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र ने कई अप्सराओं को भेजी, किंतु निष्फल रहा। ऋषि ने क्रुद्ध होकर एक ऐसी नारी उत्पन्न की जो उन सबसे अधिक सुंदर थी। उसके सौंदर्य के सामने सभी अप्सराओं के रंग फीके पड़ गए। वे लज्जित होकर वापस लौट गयीं।

पौराणिक कथाओं के आधार पर उर्वशी नारायण की अप्सरा थी एवं इन्द्र के दरबार में प्रमुख नर्तकी थी। अप्सरा होने के कारण उसका सौंदर्य अनुपम एवं शाश्वत था। वह अनिंद्य सुंदरी थी। वह नंदन वन की शोभा, सुरपुर की सौंदर्य रानी एवं [illegible] के साथ अनादि काल की रति की साकार

P.T.O.

प्रतिमा है। वह रूप का स्वरूप, त्रिभुवन की प्राणेश्वरी तथा संपूर्ण भूतल के प्राणियों की तृष्णा है। कवि ने स्वयं उसकी सुंदरता का आभास कराया है—

"पाषाणों के अनगढ़ अंगों को काट-छाँट
मैं ही निविड़ हरीतिमा भूमि मध्य सभा
मंदिर सोपाना काम लुटाता जाती।

इस मंदिर सोपाना का प्रेम पृथ्वी लोकवासी पुरुरवा से हो जाता है। दिनकर का कथन है कि एक बार उर्वशी कुबेर के घर से निकल रही थी कि एक दैत्य उसे उठाकर ले जाने लगा। उर्वशी की त्राहि माम् सुनकर पुरुरवा वहाँ पहुँचा और उसे दैत्य से मुक्त करवाया। इस तरह पुरुरवा और उर्वशी पहली ही नजर में एक दूसरे के प्रेमपाश में बँध गए। चूंकि उर्वशी एक अप्सरा है इसलिए धरती पर आकर वह पुरुष के प्रेम पाश में बँधना चाहती है। उर्वशी जहाँ चक्षु, रसना, एवं घ्राण लोक की कामनाओं की प्रतीक है, इसलिए वह मानिनी भी है। उसे दुःख है कि कि वह पुरुरवा के साथ स्वयं चली आई, उसकी तो इच्छा थी कि पुरुष स्वयं चलकर उसके पास आए।

नारी की स्वाभाविक वृत्ति है कि वह बुद्धि की अपेक्षा भावना पर बल देती है। रूप ही उसके लिए सब कुछ है। वैराग्य और और बुद्धि उसके सामने हेय है। जब कभी पुरुरवा भावलोक से हटकर ज्ञान लोक की बातें करने लगता है वह रूप की महिमा का ज्ञान कराके उसे सौंदर्य के धरातल पर ले आती है। उर्वशी भावना की साकार मूर्ति है। बुद्धि अथवा वैराग्य का नाम सुनकर उसकी भृकुटी तन जाती है।

उर्वशी प्रेम की पुजारिन है। दर्शन के अनुसार मनुष्य प्रेम और संन्यास दोनों को प्राप्त कर सकता है। परमेश्वर और प्रकृति दोनों भिन्न वस्तुएँ नहीं हैं। वे दोनों प्रतिरोधी एवं प्रतिबल नहीं हैं। दोनों एक ही लक्ष्य पर पहुँचने के साधन हैं। पुरुष को चाहिए प्रकृति से नेह लगाकर ही ब्रह्म को प्राप्त करे।

उर्वशी जहाँ प्रेम की सच्ची साकार प्रतिमा है वहीं सच्चे अर्थों में वह जननी भी है। शापवश वह अपने

मातृत्व की स्वच्छ पीयूष धारा बहती है। वह अन्य अप्सराओं की तरह नहीं है जो केवल दूसरों को रिझा कर मुक्त विहार करने वाली है। उर्वशी के मातृत्व को उद्घाटित करने वाली इन पंक्तियों को देखा जा सकता है —

कोमल भ्रूण वहन, केवल प्रजनन मातृत्व नहीं है,
ममता नहीं पालती है जो शिशु को हृदय लगाकर।

इस प्रकार दिनकर जी ने उर्वशी को केवल भौतिक भोग्या तक ही नहीं रखा है अपितु उसमें पत्नी धर्म, मातृत्व एवं प्रेयसी के गुणों को आत्मसात करके उसे सर्वांग सुन्दरी बनाकर कविता के सांचे में ढाला है। प्रेमिका के अतिरिक्त उर्वशी एक माँ भी है उसका हृदय वात्सल्य भावनाओं से ओत-प्रोत है। इसलिए तो वह अपने पुत्र आयु को छिप-छिप कर देखती है उसे ऐसा लगता है जैसे अपना सारा प्यार उस पर उड़ेल दे। वस्तुतः माँ के प्यार की कोई सीमा भी नहीं होती। उर्वशी द्वारा अपनी सखी चित्रलेखा से कही गयी निम्न पंक्तियाँ ही उसके मातृत्व के अतिरेक रूप को प्रतिभासित करने में सक्षम है —

हर माँ अपने ही निज चाही से कहीं पहुँच जाती है
जलती है दिन-रात, चाहती है नवीन देह को खोकर
पर हो जाती वह असीम कितनी सशक्त होकर।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उर्वशी का चरित्र इन्द्रधनुष की तरह बहुरंगी है। एक ओर वह मानिनी, प्रेमिका है, आज्ञाकारी पत्नी है वह सौम्य वात्सल्य पर अभ्यागत एक वत्सला एक माँ भी है। कवि ने उर्वशी के रूप में एक सम्पूर्ण नारी का एक मनोरम चरित्र प्रस्तुत किया है। उर्वशी प्रबन्ध रचना के माध्यम से दिनकर ने अपनी कल्पना और भावों की अभिव्यक्ति पर हिन्दी जगत को एक ऐसी धरोहर दी जो हिन्दी साहित्य जगत में सबसे अनूठी है।

P.G. Semester III
CC – X
"Urvashi Ka charitra chitran"